वेणीसंहारम् के श्लोकों का अनुवाद (1 से 15)

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

निषिद्धैरप्येभिर्लुलितमकरन्दो मधुकरैः

करैरिन्दोरन्तश्छुरित इव संभिन्नमुकुलः।

विधत्तां सिद्धिं नो नयनसुभगामस्य सदसः

प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्।।

(बारम्बार) दूर किये गये भी इन भौंरों द्वारा विखेरी गई चन्द्रकिरणों द्वारा मानों मध्यभाग में व्याप्त, खिली हुई कलियों वाली, हरिचरणों में विखेरी गई यह पुष्पों की अञ्जलि इस सभा (के लोगों) की आँखों को आनन्द देने वाली सिद्धि हमें प्रदान करे।।

कालिन्द्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसं

गच्छन्तीमनुगच्छतोऽश्रुकलुषां कंसद्विषो राधिकाम्।

ततपादप्रतिमानिवेशितपदस्योद्भूतरोमोद्गते-

रक्षुण्णोऽनुनयः प्रसन्नदयितादृष्टस्य पुष्णातु वः।।

यमुना के बालुकामय तटों पर, रास-लीला के आनन्द को छोड़कर जाती हुई क्रीडा में कुपित तथा आँसू से मलिन राधा का अनुगन करते हुए, उस (राधा) के चरण चिह्नों पर पैर रखने वाले, (अतएव) उत्पन्न रोमाञ्च वाले और प्रसन्न हुई प्रिया के द्वारा देखे गये कृष्ण (कंस-शत्रु) का अखण्डित अनुनय आप लोगों का पोषण करे।

दृष्टः सप्रेम देव्या किमिदमिति भयात्संभ्रमाच्चासुरीभिः

शान्तान्तस्तत्त्वसारैः सकरुणमृषिभिर्विष्णुना सस्मितेन।

आकृष्यास्त्रं सगर्वैरुपशमितवधूसंभ्रमैर्दैत्यवीरैः

सानन्दं देवताभिर्मयपुरदहने धूर्जटिः पातु युष्मान्।।

मय (नामक दैत्य के द्वारा निर्मित त्रिपुरासुर की) नगरी के जलाने के समय देवी (पार्वती) के द्वारा प्रेमपूर्वक (देखे गये), असुर- रमणियों के द्वारा 'यह क्या' इस प्रकार भय और घबराहट से (देखे गये), शान्त अन्तःकरण में परमात्मचिन्तन रूप सार वाले ऋषियों के द्वारा करुणापूर्वक (देखे गये), विष्णु के द्वारा मन्द मुसकान के साथ (देखे गये), स्त्रियों की घबराहट को शान्त करने वाले और गर्वीले दैत्य-वीरों के द्वारा अस्त्र खींचकर (देखे गये) तथा देवताओं के द्वारा आनन्द के साथ देखे गये शिव आप लोगों की रक्षा करें।

श्रवणाञ्जलिपुटपेयं विरचितवान्भारताख्यममृतं यः।

तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे।।

जिन कृष्णद्वैपायन व्यास ने कर्णछिद्र रूपी अञ्जलिपुट द्वारा पीने योग्य महाभारत नामक अमृत (ग्रन्थ) की रचना की, उन अनुराग (रजोगुण) रहित तमोगुण रहित (कृष्णद्वैपायन) वेदव्यास को मैं प्रणाम करता हूँ।

कुसुमाञ्जलिरपर इव प्रकीर्यते काव्यबन्ध एषोऽत्र।

मधुलिह इव मधुबिन्दुन्विरलानपि भजत गुणलेशान्।।

यह वेणीसंहार नामक काव्य (नाटक) रचना दूसरी पुष्पाञ्जलि के समान उपस्थित की जा रही है। जिस प्रकार भौंरे मधुकणों का आस्वादन करते हैं उसी प्रकार आप सब सभाजन उसके लेशमात्र गुणों का आस्वादन करें।

सत्पक्षा मधुरगिरः प्रसाधिताशा मदोद्धतारम्भाः।

निपतन्ति धार्तराष्ट्राः कालवशान्मेदिनीपृष्ठे।।

(हंसपक्ष में)- उत्तम पंखों वाले, मधुर वाणी वाले, दिशाओं को अलंकृत करने वाले तथा मद के कारण उद्दाम क्रीडा करने वाले हंस समय के प्रभाव से भूतल पर उतर रहे हैं। (दुर्योधन आदि के पक्ष में-) उत्तम पक्ष (सेना या सहायक) वाले, मधुर वाणी वाले, दिशाओं को वश में करने वाले और गर्व से ओद्धत्यपूर्ण कार्य करने वाले धृतराष्ट्रपुत्र (दुर्योधन आदि) मृत्यु के वश में होने के कारण भू-पृष्ठ पर गिर रहे हैं।

निर्वाणवैरदहनाः प्रशमादरीणां

नन्दन्तु पाण्डुतनयाः सह माधवेन।

रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च

स्वस्था भवन्तु कुरुराजसुताः सभृत्याः।।

शत्रुओं के विनाश से समाप्त हुए वैर रूपी अग्नि वाले युधिष्ठिरादि पाण्डव माधव सहित प्रसन्न होवें तथा जिनके रक्त से भूमि अलङ्कृत हुई है ऐसे नष्ट आकार वाले दुर्योधनादि कौरव भृत्यवर्ग सहित स्वस्थ होवें।

लाक्षागृहानलबिषान्त्रसभाप्रवेशैः

प्राणेषु वित्तनिचयेषु च नः प्रहृत्य।

आकृष्यपाण्डववधूपरिधानकेशान्

स्वस्था भवन्ति मयि जीवति धार्तराष्ट्राः।।

लाक्षागृह के अग्नि-काण्ड, विषयुक्त भोजन, सभा में द्रौपदी के वस्त्रों व केशों को खींचना आदि भयङ्कर कार्य करके हम लोगों के प्राणों तथा जुआ आदि क्रियाओं द्वारा धन संग्रह पर आक्रमण करके, मेरे जीवित होते हुए धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधनादि स्वस्थ रह सकेंगे?

धृतराष्ट्रस्य तनयान्कृतवैरान् पदे पदे।

राजा न चेन्निषेद्धा स्यात्कः क्षमेत तवानुजः।।

यदि महाराज युधिष्ठिर मना न करें तो आपका पग-पग पर वैर करने वाले धृतराष्ट्र के पुत्र (दुर्योधनादि) को कौन-सा आपका कनिष्ठ भ्राता क्षमा कर सकता है।

प्रवृद्धं यद्वैरं मम खलु शिशोरेव कुरुभि-

र्न तत्रार्यो हेतुर्न भवति किरीटी न च युवाम्।

जरासंधस्योरःस्थलमिव विरूढं पुनरपि

क्रुधा सन्धिं भीमो विघटयति यूयं घटयत।।

बचपन से ही मेरा कौरवों के साथ जो वैर बढ़ता रहा है उसका कारण न आर्य युधिष्ठिर हैं, न किरीटी अर्जुन हैं और न तुम लोग ही हो। जरासंध के वक्षःस्थल के समान फिर से वियोजित सन्धि को भीमसेन क्रुद्ध होकर तोड़ रहा है, आप लोग इसे जोड़े।

तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयां

वने व्याधैः सार्द्धं सुचिरमुषितं वल्कलधरैः।

विराटस्यावासे स्थितमनुचितारम्भनिभृतं

गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु।।

भरी राजसभा में उस दशा (रजःस्वला अवस्था) में पाञ्चाली को देख वल्कलधारण किये भीलों के साथ वन में बहुत समय तक रहना, विराट के आवास में कंकादि रूपों में अनुचित उद्योगों को करते हुये गोपनीय ढंग से समय बिताना देख कर भ्राता जी मेरे ऊपर क्रुद्ध होकर अब भी कौरवों पर क्रुद्ध नहीं हो पा रहे हैं।

युष्मच्छासनलंघनांहसि मया मग्नेन नाम स्थितं

प्राप्ता नाम विगर्हणा स्थितिमतां मध्येऽनुजानामपि।

क्रोधोल्लासितशोणितारुणगदस्योच्छिन्दतः कौरवा-

नद्यैकं दिवसं ममासि न गुरुर्नाहं विधेयस्तव।।

आपकी आज्ञोल्लंघन रूपी महापाप में मैं भले ही डूब गया, आज्ञापालन करने वाले अनुजों के भी मध्य मैंने भले ही निन्दा प्राप्त कर ली, क्रोध से कौरवों के ऊपर प्रहार करने को उठाई गई खून से लाल वर्ण वाली गदा वाले, कौरवों को समूल उखाड़ फेंकने वाले मुझ भीम के आज एक दिन के लिए आप बड़े भाई नहीं हैं और मैं भी (आज भर के लिए) आपका आज्ञापालक नहीं हूँ।

यत्तदूर्जितमत्युग्रं क्षात्रं तेजोऽस्य भूपतेः।

दीव्यताऽक्षैस्तदाऽनेन नूनं तदपि हारितम्।।

इन महाराज युधिष्ठिर का जो वह अति प्रचण्ड बल युक्त क्षत्रियोचित प्रताप था, वह भी पासों के द्वारा जुआ खेलते हुये इन्होंने उस समय (द्यूतक्रीडा के समय) निश्चित रूप से हरा दिया।

यद्वैद्युतमिव ज्योतिरार्ये क्रुद्धेऽद्य संभृतम्।

तत्प्रावृडिव कृष्णेयं नूनं सम्बर्द्धयिष्यति।।

आज आर्य भीम के क्रुद्ध होने पर बिजली के समान जो तेज सञ्चित हुआ है उसे यह कृष्णा वर्षा के समान अवश्य बढ़ा देगी अर्थात् भीमसेन के क्रोध को अवश्य भड़का देगी।

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्

दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।

सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू

सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन।।

क्या मैं संग्राम में क्रोध में आकर दुर्योधनादि सौ कौरवों का विनाश नहीं कर डालूँगा? क्या दुःशासन के वक्षःस्थल से मैं रक्तपान नहीं कर सकूँगा? क्या अपनी गदा के प्रहार से सुबोधन की दोनों जांघें चकनाचूर नहीं कर डालूँगा ? (जो) आपके नृपति (युधिष्ठिर) पाँच गाँव के मूल्य से कौरवों के साथ सन्धि करेंगे।